

मोड्यूल 15 : सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा जेन्टामायसिन की सुई से उपचार

सत्र 1 : नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान तथा उपचार की दोहराई

दिवस : 2

समयावधि : 2 घं. 35 मि.

प्रयोजन

आशाओं ने पिछली प्रशिक्षण कार्यशाला में सेप्सिस का निदान तथा कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करना सीखा है। उन्होंने उस निदान तथा उपचार को दोहराकर उसकी परीक्षा भी उत्तीर्ण की है। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में वे कोट्रिमॉक्सेज़ोल तथा जेन्टामायसीन की सुई से सेप्सिस का उपचार करना सीखेंगी। इस सत्र में वे नवजात शिशु के सेप्सिस को कोट्रिमॉक्सेज़ोल के उपचार तक दोहरायेंगी।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. बताना कि सेप्सिस (जन्तुदोष) क्या है, यह कैसे होता है और इससे क्या खतरे हैं।
2. नवजात शिशु में सेप्सिस का निदान करना।
3. बताना कि सेप्सिस होने से कैसे रोका जा सकता है।
4. सेप्सिस का कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करना

सामग्री

- अध्ययनपत्र : नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) संबंधी जानकारी (अध्ययनपत्र में दी है)
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: कक्षा में केस प्रस्तुति
- अभ्यासपत्र 1: केस अध्ययन
- प्रशिक्षक प्रपत्र 2 : केस अध्ययन के उत्तर

तैयारी

- आशाओं को बताएँ कि माँ तथा नवजात शिशु का रिकार्ड तथा अध्ययनपत्र वे अपने पास रखें।
- आशाओं की संख्या के अनुसार अभ्यासपत्र 1 की प्रतियाँ तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

प्रस्तुति एवं चर्चा (1 घं.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. निम्न कहानी सुनाएँ :
जानकी ने शनिवार को एक पुत्री को जन्म दिया। वह जन्म के समय स्वस्थ थी। तीसरे दिन उसकी टुंडी में मवाद हो गया। सातवें दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया।
2. आशाओंसे पूछें कि शिशु को कौन सी बीमारी है ? उनके उत्तर सुनें और सही उत्तरों पर उनकी प्रशंसा करें। यदि उन्हें नहीं मालूम हो तो बताएँ, कि उसे सेप्सिस (जन्तुदोष) हुआ है जो एक गंभीर प्रकार का संक्रमण है। परिभाषा नीचे दिए विषय-वस्तु बाक्स में देखें

परिभाषा : सेप्सिस (जन्तुदोष) एक प्रकार का संक्रमण है।

नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) फेफड़े, मस्तिष्क अथवा खून का गंभीर संक्रमण है।

बीमारी कितनी गंभीर होती है ?

भारतवर्ष के ग्रामीण क्षेत्रों में 10 में से 1 नवजात शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) हो जाता है। जन्म के बाद पहले महीने में सेप्सिस (जन्तुदोष) होना बहुत खतरनाक है और इससे शिशु की मौत भी हो सकती है। इलाज के अभाव में सेप्सिस (जन्तुदोष) से पीड़ित अधिकांश शिशु मर जाते हैं। इलाज के बाद अधिकांश जीवित रहते हैं और उनका विकास/वृद्धि सामान्य रूप से होते हैं।

3. आशाओंसे पूछें कि क्या उन्हें पिछले दो महीनों में किसी ऐसे शिशु के बारे में अनुभव है, जिसे जन्म के पहले महीने में संक्रमण हुआ हो। शिशु का क्या हुआ ?
4. बताएँ कि सेप्सिस (जन्तुदोष) बहुत गंभीर बीमारी है। इलाज के अभाव में इससे पीड़ित अधिकांश शिशुओं की मौत हो जाती है। परन्तु इलाज के बाद अधिकांश जीवित रहते हैं।
5. आशाओंसे पूछें कि नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) के मुख्य कारण क्या हो सकते हैं ? उनके उत्तर सुनें और बोर्ड अथवा कागज पर लिखें।
6. आशाओं से कहें कि वे नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) संबंधी जानकारी वाली शीट अध्ययनपत्र में देखें। कारणों के बारे में चर्चा करें और आशाओं द्वारा बताए गए कारणों से तुलना करें। जो उन्होंने न बताया हो, उसे शामिल करें और त्रुटीपूर्ण बातें निकाल दें।
7. आशाओंको बताएँ कि शिशुओं में संक्रमण होते ही उसका पता लगाना और उसे होने से रोकना उनके रोज़मर्रा के काम में शामिल है। जिन कारणों से शिशुओं को सेप्सिस होने का खतरा होता है वह हैं: माँ में संक्रमण होने, समय से पूर्व जन्म, कम वज़न के शिशु का जन्म, केवल स्तनपान न कराना और गन्दे हाथों अथवा कपड़ों के प्रयोग। पहले से सावधानी बरतने से शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) होने को रोका जा सकता है।
8. बताएँ कि नवजात शिशुओं में संक्रमण शरीर के अलग-अलग हिस्सों में हो सकता है, जैसे नाल में संक्रमण, या फेफड़ों में (निमोनिया) या फिर खून में। यह संक्रमण जल्दी ही गंभीर रूप धारण कर सकते हैं। नवजात शिशु – खास-तौर पर समय से पूर्व जन्मे और कम वज़न वाले – संक्रमण का मुकाबला प्रभावकारी ढंग से नहीं कर पाते। उनके शरीर में शीघ्र ही जीवविष (टॉक्सिन) फैल जाते हैं और उनका रोना और दूध पीना बंद हो सकता है और वे ठंडा पड़ सकते हैं। ऐसे में यह बताना मुश्किल होता है कि उन्हें संक्रमण शरीर के किस भाग में शुरू हुआ और साफ-साफ लक्षण दिखाई न देने के कारण, सही निदान नहीं किया जा सकता। आशाओंको सेप्सिस (जन्तुदोष) के निदान में सहायता देने के लिए हमने विशिष्ट मापदण्डों को प्रयोग में लाते हुए एक सरल विधि विकसित की है (अध्ययनपत्र देखें)
9. आशाओं से कहें कि वे घरों का दौरा फॉर्म का सेप्सिस निदान भाग देखें। चर्चा करें।
10. बताएँ कि सेप्सिस (जन्तुदोष) के निदान के लिए एक ही समय पर (उसी दिन) दो लक्षण दिखाई देने चाहिए। क्यों ? क्योंकि एक लक्षण तो किसी भी शिशु में हो सकता है, पर 2 लक्षणों का होना निश्चित रूप से बताता है कि उसे सेप्सिस (जन्तुदोष) ही है।

11. यह भी ध्यान में रखें कि पहले 3 लक्षण — हाथ पैर लुंज पुंज, कम या बिल्कुल स्तनपान नहीं करना, धीमे से या बिल्कुल भी न रोना, यदि ये जन्म के समय भी दिखाई दिए हों, तो मापदण्डों में शामिल नहीं होंगे। इन लक्षणों को तभी सेप्सिस (जन्तुदोष) के लक्षण माना जाएगा जब शिशु जन्म के समय तो ठीक-ठाक रहा हो, पर बाद में उसमें ये लक्षण विकसित होना शुरू हुए हों (पहले स्तनपान ठीक से कर रहा हो और बाद में स्तनपान ठीक से नहीं या बिल्कुल नहीं कर पा रहा हो, पहले हाथ पैरों में अच्छी ताकद हो जो बाद में हाथ पैर लुंज पुंज हो गये हो, शुरू में रोना सामान्य था जो बाद में धीमे से रोया या बिल्कुल नहीं रोया हो)

12. उदाहरण दें :

1. बिन्दी जन्म के समय धीमे से रोई और उसकी साँस भी धीमी चल रही थी। ऐसी हालत 4 दिन तक रही। तीसरे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ने लगा। क्या उसे सेप्सिस (जन्तुदोष) था ? (नहीं) क्यों? (तीसरे दिन पाया जाने वाला लक्षण केवल शरीर का ठंडा पड़ना था। जन्म के समय ही वह धीमे रोई/हल्की साँस ली, अतः इन्हें सेप्सिस (जन्तुदोष) के लक्षणों में शामिल नहीं किया जा सकता। चौथे दिन उसका पेट फूलना शुरू हुआ और वह छूने में ठंडी भी लग रही थी ? ऐसे में आप क्या करेंगी ? (सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान क्योंकि चौथे दिन एक साथ 2 लक्षण दिखाई दिए)।

2. नीता का जन्म के समय दम घुटा हुआ था। वह न रोई, न उसकी साँस चल रही थी। कृत्रिम साँस देने के बाद वह चैतन्य हो गई और उसका रोना/साँस लेना सामान्य हो गया। छठे दिन वह ठंडी पड़ने लगी और धीमे से रो पा रही थी। आप क्या निदान करेंगी (सेप्सिस (जन्तुदोष) क्योंकि उसमें दो लक्षण "ठंडा पड़ना" और "धीमे से रोना" एक साथ दिखाई दिए)

नोट : यदि शिशु में सेप्सिस का एक लक्षण हो तो अगले तीन दिन आशा रोज शिशु के घर जाएँ और सेप्सिस के अन्य लक्षणों के लिये सतर्क रहें। यदि शिशु को स्तनपान की समस्या या ठंडे पड़ने की समस्या हो तो उपचार मार्गदर्शिका के अनुसार उपचार करें। टुंडी में मवाद हो तो जी. वी. पेंट लगाएँ। यदि सेप्सिस के अन्य लक्षण के साथ बुखार हो तो पैरासिटामॉल देकर 1 घंटा इन्तजार करें। यदि बुखार कम न हो और सेप्सिस का अन्य लक्षण बना रहें तो सेप्सिस का उपचार करें।

13. आशाओंसे पूछें कि क्या सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम की जा सकती है ? वे 'हाँ' में उत्तर देंगी। पूछें कि कैसे रोकथाम की जा सकती है? उनके उत्तर सुनें (अध्ययनपत्र देखें)

✓ यदि वे बतायें कि 'स्वच्छतापूर्वक काम करने से' तो उनसे विस्तार से बताने को कहें (जैसे — शिशुजन्म से पूर्व दाईयाँ हाथ धोएँ और अपने हाथ माँ के अन्दरूनी हिस्सों में न डालें, साफ ब्लेड का प्रयोग करें, आशा और अन्य सभी लोग शिशु को छूने/गोद लेने से पहले हाथ धोएँ, शौच के बाद तथा शिशु की टट्टी धोने के बाद माँ अपने हाथ धोएँ, बीमार लोग जच्चा/बच्चा के कमरे में न जाएँ आदि)

✓ पूछें कि शिशु को गर्म कैसे रखेंगी ? (प्रसव के तुरंत बाद शिशु को पोंछे और सूखे कपड़े में लपेटें; माँ के पास लिटाएँ और स्तनपान शुरू कराएँ; शिशु को कपड़े पहनाएँ, यदि शिशु कम वजन का पैदा हुआ है, तो गर्म थैली और/अथवा माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि का प्रयोग करें)।

✓ पूछें कि स्तनपान कराने की अच्छी विधियाँ कौन सी हैं ? (स्तनपान जन्म के तुरंत बाद शुरू कराना शिशु के मॉंगने पर पिलाना (पहले कुछ हफ्तों में हर 2-3 घंटे बाद), केवल स्तनपान कराना (अन्य कोई भी तरल पदार्थ/आहार न देना)।

14. बतायें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम, और माँ/बच्चे के पास जाने पर शिशु के स्वास्थ्य की अच्छी देखभाल करने में आशाओं की अहम् भूमिका है। उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि शिशुजन्म स्वच्छतापूर्वक हो, शिशु को गर्म रखा जाए विशेषकर सर्दियों में और स्तनपान ठीक से कराया जाए।

- ✓ आशा प्रसव के तुरंत बाद स्तनपान शुरू करवा दें।
- ✓ प्रसव के बाद के अपने दौरों में आशा ध्यान रखें कि शिशु को स्तनपान ठीक से कराया जा रहा हो, वह माँ को स्तनपान कराते हुए देखें और पूछें कि रात-दिन में कितनी बार उसने स्तनपान कराया। वह शिशु का वजन भी करें।
- ✓ इसी तरह शिशु को गर्म रखने पर भी ध्यान दें। यदि तापमान सामान्य से कम है, तो जरूरी है कि माँ शिशु को गर्म रखें; ठीक से कपड़े पहनाएँ और ओढ़ाएँ।
- ✓ आशा कई बार हाथ धोने की आदत पर जोर दें।

घर का हर दौरा शिशु के स्वास्थ्य की देखभाल और सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम का एक अवसर प्रदान करता है। आपका व्यवहार ही सर्वोत्तम शिक्षक है।

प्रस्तुति एवं चर्चा (15 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं से पूछें कि सेप्सिस के उपचार के कौनसे चार भाग हैं? उनके उत्तरों में निम्न होना चाहिये।
 - शिशु की बीमारी के बारे में माता-पिता को बताना और शिशु को अस्पताल ले जाने की सलाह देना। यदि वे उसे अस्पताल ले जाना नहीं चाहते, तो शिशु की घर पर ही देखभाल की स्वीकृति लेना।
 - उपचार करना (दवा की सही खुराक उतने दिनों तक देना जितना कि आवश्यक हो।)
 - माता-पिता को शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में सलाह देना और दिन में दो बार उसे घर पर देखने जाना। देखना कि उसकी ठीक-ठाक देखभाल की जा रही है।
 - आवश्यक फॉर्म भरना और लेखा-जोखा रखना।
2. बतायें कि कोट्रिमाॅक्सेजोल द्वारा इलाज कितने दिन चलेगा यह गर्भकाल के आधार पर निश्चित किया जाता है। नवजात शिशुओं के लिए खुराक है — $1/4$ चम्मच कोट्रिमाॅक्सेजोल दिन में दो बार।
 - समय से पूर्व जन्मे शिशुओं को दवा 10 दिन तक दी जानी चाहिए।
 - ठीक समय पर जन्मे शिशुओं को दवा 7 दिन तक दी जानी चाहिए।माता-पिता द्वारा लिखित स्वीकृति दिए जाने के तुरंत बाद पहली खुराक दे दें। कोट्रिमाॅक्सेजोल की दवा आशा द्वारा (या माँ द्वारा ठीक तरह समझाकर) सुबह और शाम खिलानी है। बतायें कि आशा दिन में दो बार शिशु के घर पर जाकर तब तक देखभाल करे जब तक कि इलाज पूरा न हो जाए, अर्थात् ठीक समय पर जन्मे शिशु के लिए 7 दिन तक और समय से पूर्व जन्मे शिशु के लिए 10 दिन तक।
3. आशाओं से घरेलू देखभाल के बारे में पूछें। उनके उत्तर सुनें। बतायें कि सेप्सिस वाले शिशुओं को अधिक देखभाल की जरूरत होती है। सुनिश्चित करें कि माँ—
 - शिशु को गर्म रखें।
 - थोड़ी-थोड़ी देर में स्तनपान करायें (2-2 घंटे बाद)
 - सलाह नुसार दवा दें
 - शिशु को छूने से पहले हाथ धोएँ

- यदि हालत बिगड़ने लगे, तो तुरंत आशा को बुलाएँ
- अन्य संक्रमणों की देखभाल करें – जैसे नाभि (टुंडी), त्वचा, आँखें आदि।

बड़े समूह में केस प्रस्तुति (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रशिक्षक निम्नलिखित केस सभी के सामने प्रस्तुत करें (प्रशिक्षक प्रपत्र 1 देखें) पहला भाग पढ़ें और प्रश्न पूछें। उत्तर देने का समय दें। उत्तरों पर चर्चा करें। यदि आशाओं ने गलत उत्तर दिए हों, तो सभी से राय लें। केस के दूसरे भाग को पढ़ें।
2. अंत में केस की और आशाओं द्वारा किए गए कार्यों की समीक्षा करें।
3. किसी के कोई प्रश्न/शंकाएं हों, तो समाधान करें।

प्रशिक्षणार्थियों हेतु अभ्यास – केस अध्ययन (40 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. अभ्यासपत्र 1: केस अध्ययन बाँटें।
2. सभी आशाओंको 3–4 सदस्यों के छोटे समूहों में बाँटें। प्रत्येक समूह के सदस्य मिलकर केस का अभ्यास और प्रश्नों पर चर्चा करें। (25 मि.)
3. पूरे समूह के साथ मिलकर केस अध्ययनों पर चर्चा करें (20 मि.)
4. प्रश्नों का समाधान करें। ध्यान रहें कि सारी समस्याओं का समाधान हो।

सारांश : (10 मि.)

- किसी एक आशासे सेप्सिस (जन्तुदोष) की परिभाषा बताने को कहें और पूछें कि इसका निदान और इलाज क्यों आवश्यक है (सेप्सिस (जन्तुदोष) एक प्रकार का संक्रमण है। हमारे देश के गाँवों में नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) होना आम बात है और यदि इसका शीघ्र ही इलाज न किया जाए तो शिशु की मौत भी हो सकती है।)
- आशाओंसे सेप्सिस (जन्तुदोष) के निदान के लिए सात (7) लक्षण बताने को कहें।
- पूछें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान कैसे किया जाता है? (नवजात शिशु में एक साथ 2 लक्षणों का पाया जाना)
- पूछें कि यदि सेप्सिस का एक लक्षण मौजूद हो तो वे क्या करती है? (अगले तीन दिन तक रोज शिशु के घर का दौरा करें। यदि शिशु को स्तनपान संबंधी समस्या, ठंडे पड़ने की समस्या या बुखार हो तो जैसा आपने सीखा है उस प्रकार से शिशु का उपचार करें।)
- सभी आशाओंसे पूछें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम कैसे की जा सकती है? (स्वच्छ प्रसव, हाथ धोने, स्तनपान कराने, शिशु को गर्म रखने, स्वच्छ कपड़ों के प्रयोग, और बीमार लोगों को दूर रखना)।
- कुछ गलतियाँ हो तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओंकी उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बताना कि सेप्सिस (जन्तुदोष) क्या है, यह कैसे होता है और इससे क्या खतरे हैं।	प्रश्न-उत्तर	—
नवजात शिशु में सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान करना	केस अध्ययन	आशा द्वारा केस अध्ययन के उत्तर
बताना कि सेप्सिस (जन्तुदोष) होने से कैसे रोका जा सकता है	चर्चा/केस अध्ययन	आशा द्वारा केस अध्ययन के उत्तर
सेप्सिस का कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार करना	प्रश्नोत्तर	—